MODEL ANSWERKEY

सामान्य हिन्दी

26.05.2019

प्रश्न 1.

(i) ध्वनि– मानव मुख से उत्पन्न ऐसा कम्पन या बिक्षोभ जो कानों के द्वारा सुना जा सकता हो, ध्वनि कहा जा सकता है।

(ii) संपर्क भाषा– दो भिन्न मात्रा भाषीयों के मध्य विचारों के आदान प्रदान हेतु जिस भाषा का प्रयोग किया जाता हैं उसे संपर्क भाषा कहते है।

(iii) मात्रा– किसी ध्वनि के उच्चारण में लगने वाले समय को मात्रा कहा जाता है।

(iv) 1. गासा द तार्सी 2. शिवसिंह सेंगर 3. जॉर्ज ग्रियेसन

(v) 1967 के बाद 71वें संविधान संशोधन 1992 में मणिपुरी, कोंकणी, नेपाली तथा 12वें संविधान संशोधन 2003 में बोडो, डोंगरी, मैथली, संथाली जोड़ी गई। जिससे वर्तमान में इनकी संख्या 22 हो गई है।

(vi) मुहावरा और लोकोक्तियों में अन्तर–
1. मुहावरा का अर्थ होता हैं बोलना। जबकि लोकोक्ति का अर्थ होता हैं लोगों में प्रचलित उक्ति।
2. मुहावरा मानवीय ज्ञान की धरोहर हैं। जबकि लोकोक्ति मानवीय संस्कृति की धरोहर हैं।
3. मुहावरा वाक्यांश होता हैं। जबकि लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती हैं।

(vii) विराम चिह्न– वक्ता द्वारा भाषण देते समय अपनी अभिव्यक्ति को सुस्पष्ट करने के लिए जहां थोड़ा सा रूका जाता हैं उसे विराम कहते हैं तथा विराम को चिन्ह के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता हैं उसे विराम चिन्हन कहते हैं।

(viii) तुलसी दास की भाषा व शैली– रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि तुलसीदास जी की भाषा अवधि थी तथा शैली कड़वक, सवैया तथा कवित थी।

(ix) निबंध लेखन की तीन शैलियां– जब लेखक किसी विषय या घटना के प्रति तटस्थ होकर अपने विचार प्रस्तुत करता हैं तो उसे निबंध कहा जाता है। निबंध लेखन की तीन शैलियां–
1. आगमन 2. निगमन 3. लहर

(x) तत्सम व तद्भव–
1. तत्सम शब्द तत् + सम से मिलकर बना हैं जिसका अर्थ होता हैं संस्कृत के समान शब्द है। अर्थात् वे शब्द जो आज हिन्दी में संस्कृत के समान ही प्रयोग में लाए जाते हैं। उन्हें तत्सम कहते हैं। जबकि तद्भव शब्द तत् + भव से मिलकर बना हैं जिसका अर्थ होता हैं संस्कृत से उत्पन्न शब्द। अर्थात् वे शब्द जो संस्कृत के शब्दों में कुछ परिवर्तन करके प्रयोग में लाए गए हो तद्भव कहलाते हैं। जैसे– सूर्य– सूरज, कृपण – कंजूस

(xi) राजभाषा– सरकारी कामगाज में प्रयुक्त होने वाली भाषा को राजभाषा कहा जाता हैं।
भारत की राजभाषा हिन्दी हैं, तथा संविधान के भाग 17 के अनु. 343 से लेकर 351 तक राजभाषा संबंधी प्रावधान किए गए हैं।

(xii) विज्ञान व तकनीकि शब्दावली आयोग का गठन– 1961 में डी.एस.कोठारी की अध्यक्षता में दिल्ली में।

(xiii) औपचारिक पत्र– जिन पत्रों का विनिमय किसी विशेष उद्देश्य तथा विशेष प्रारूप में किया जाए तो उन्हें औपचारिक पत्र कहते हैं। इन पत्रों में कथ्य ही मुख्य होता हैं।

(xiv) अनौपचारिक पत्र को तीन विशेषताएँ–
1. इनमें आत्मीयता प्रधान होती हैं।
2. यह सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए लिखा जाता है।
3. इसका कोई विशेष प्रारूप नहीं होता हैं।

(xv) अच्छे वाक्य की तीन विशेषताएं–
1. वाक्य के पदों में निकटता होनी चाहिए।
2. वाक्य पूर्ण होना चाहिए।
3. पद क्रम उचित होना चाहिए।

(xvi) संज्ञा व सर्वनाम में अन्तर– वे विकारी शब्द जो किसी वस्तु, व्यक्ति, स्थान का बोध कराएं संज्ञा कहलाते हैं। जैसे– यमुना, गंगा, कपिल इत्यादि। जबकि संज्ञा के स्थान पर तथा संज्ञा की पुनरावृत्ति रोकने के लिए जिन विकारी शब्दों का प्रयोग किया जाता हैं। उन्हें सर्वनाम कहते हैं। जैसे– यह, मैं, तुम आदि।

(xvii) उत्पत्ति की दृष्टि से तीन शब्द–
1. तत्सम 2. तद्भव 3. देशज

(xviii) उद्धरण चिह्न – किसी ग्रंथ की पंक्ति या महापुरूष के द्वारा कही गई उक्ति को ज्यों कि त्यों लिखने के लिए जिस चिन्ह्न का प्रयोग किया जाता हैं, उसे उद्धरण चिह्न कहते हैं। जैसे– ''तुलसीदास जी ने कहा था कि– विनाश काले विपरीत बुद्धि''।

(xix) लिपि व भाषा में अन्तर– किसी भाषा के ध्वनि चिह्नों को जिस प्रकार से व्यक्त किया जाता हैं उसे पिलि कहते हैं। जबकि विचार विनिमय के माध्यम को भाषा कहा जाता हैं।
लिपि दृश्य होती हैं जबकि भाषा श्रव्य होती हैं।

(xx) घोष के आधार पर ध्वनियों का वर्गीकरण– घोष के आधार पर ध्वनियों को दो भागों में बांटा गया हैं–
1. सघोष 2. अघोष

प्रश्न 2. निम्नलिखित अंग्रेजी शब्दों में से किन्हीं चार के हिन्दी पारिभाषित रूप लिखिए : (12 अंक)

(i) Abandon - परित्याग करना
(ii) Notification - अधिसूचना
(iii) Delegation - प्रतिनिधि/प्रत्यायोजन
(iv) Apology - क्षमायाचना
(v) Cabinet - मंत्रिमंडल
(vi) Fact - तथ्य

(vii) Above - उपर्युक्त
(viii) Abode - निवास –स्थान

अथवा

निम्नलिखित हिन्दी शब्दों में से किन्हीं चार के अंग्रेजी पारिभाषित शब्द लिखे :

(i) योग्य - Able
(ii) विपंजीकृत - Deregistered
(iii) दुष्प्रेरक - Abettor
(iv) अंतिम रूपदेना - Finalise
(v) मतपत्र - Ballot paper
(vi) अधिनियम - Act
(vii) लोकतांत्रिक - Democratic

3. निम्नलिखित का हिन्दी में अंग्रेजी अनुवाद कीजिए : (20 अंक)

यह कहावत हैं, ''भगवान् ने गाँव और मनुष्य ने शहर बनाये।'' यहाँ की जनसंख्या का एक बड़ा भाग गाँव में रहता है। ग्रामीण जीवन शहरी जीवन से अच्छा समझा जाता है। ग्रामों में खुले मैदान, खुली हवा और खुले घर हमें बड़ा आनन्द देते है। गाँव की जलवायु स्वास्थ्य को बनाने वाली होती है। क्या तुमने नहीं सुना, ''स्वास्थ्य ही धन है।'' गाँव में लम्बे–लम्बे वृक्ष होते हैं। उनकी डालियों पर बैठे पक्षी चहचहाते है और सारा वातावरण संगीत में डूब जाता है। छायादार वृक्षों के नीचे लेटना कितना अच्छा लगता है। यदि ताजा दूध और घी चाहिए तो भी गाँव जाना पड़ेगा। यह देखकर दुःख होता है कि ग्राम–निवासी भी आज शहरों की ओर चले आ रहे है। ऐसा क्यों? आज गाँव में जीवन सुरक्षित नहीं रहा हैं। आदमी दिन–प्रतिदिन लालची और स्वार्थी होता जा रहा है। आज जीवन का मूल्य कुछ नहीं रहा है।

'God made country and man made the town' is a well-known Phrase. India is a country of village. Rural life is considered better than urban life. The open fields, spacious houses and fresh air in the village give us immense of pleasure. The country climate improves health. Have you not head, "Health is wealth?" In the villages there are tall trees. On their branches twitter the birds and the entire environment become enchanted with music. How nice does it look when we lie under shady tree! To meet the demand of fresh ghee and milk again one is obliged to go to the village. It is distressing to see that even the dwellers of these rural areas today are rushing to towns. Why so? To-day life in the villages in not more secure. Man is becoming more-and-more greedy and selfish day-by-day. Today life has lost its worth.

अथवा

59 वर्षो की राजनीतिक अवधि किसी देश के जीवन में बहुत अधिक नहीं होती परन्तु आज हम आण्विक प्रगति के उस युग में हैं, जबकि समय और स्थान की दूरियाँ समाप्त होती जा रही है। मनुष्य भूमि की परिधि लाँघकर

प्रकृति तक पहुँचने के लिए एक साहसिक छलाँग लेने जा रहा है। रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे–राष्ट्र अपने परम्परागत राजनीतिक विरोधों को छोड़कर वैज्ञानिक और बाह्य अन्तरिक्ष के क्षेत्र में सहयोग करने के लिए तत्पर हो रहे है। इस समय सारी वसुधा के अपने कुटुम्ब मानने वाले हमारे देशवासियों का इस प्रकार हिंसात्मक उपद्रवों से राष्ट्रीय गौरव को क्षति पहुँचाना यह सूचित करता है कि हमारा देश राजनीतिक स्वशासन के अयोग्य है।

Fitly nine years of political freedom is not a very long period in the life of any country, but today we are living in that age of nuclear progress, when distances of time and space are vanishing. Crossing the limits of the earth, man is going to have an adventures jump to reach the super nature moon. Nations like the U.S.S.R. and U.S.A. forgetting their traditional political oppositions, are getting ready to co-operate in the spheres of Scientific and out-space exploration. By indulging in violent disturbances and tarnishing our national prestige at such a time. Out countrymen, who hold the whole world as their family, are only proving that our country is not fit for political freedom.

4. निम्नलिखित का अंग्रेजी से हिन्दी अनुवाद कीजिए : (15 अंक)

Freedom from pain, labour and difficulty does not make a real man. Such a man, whose life is a bed of roses possesses neither courage nor persistency. One whose life's, full of labour and hardship grow into a perfect man i.e. has courage and experience at every step in our life we find difficulties to faced if was want success in many of the plans of our life, we will have to defeat difficulties. In such as we learn a lot, ease does not teach us anything. In case we gather an experience, but if we commit mistakes. we have to face difficulties and that struggle enables us to be more experienced. Thus we learn and experience more hardship. Charles James Fox, the eminent British statesman, of eighteenth century said that a man., who continued his efforts in spite of many failures could do more than that man, who never been unsuccessful in his life.

दुःख, श्रम और कठिनाई से मुक्ति सच्च मनुष्य नहीं बनाती। ऐसा मनुष्य, जिसका जीवन फूलों की सेज रहा हो, साहस ओर अध्यवसाय नहीं रख पाता। वह, जिसका जीवन श्रम ओर कठिनाईयों से भरा हुआ हो, पूर्ण मनुष्य बनता है, अर्थात् साहसी और अनुभवी होता हैं। जीवन के हर पग पर हम सामना करने के लिए मुसीबतें पाते है। यदि जीवन की योजनाओं में से ऐसी एक में भी सफलता चाहते हैं तो हमें कठिनाईयों पर विजय प्राप्त करनी होगी। मुसीबत से हम सब कुछ सीखते है, सरलता हमें कुछ नहीं सिखाती। सरलता से हम कुछ भी अनुभव प्राप्त नहीं करते परन्तु हम यदि भूलें करते हैं तो हमें मुसीबतों का सामना करना पड़ता है तथा वह संघर्ष हमें अधिक अनुभवशील बनने योग्य बनाता है। चार्ल्स जेम्स फॉक्स 18वीं शताब्दी के ख्याति–लब्ध अंग्रेजी नेता कहा कहते थे कि वह मनुष्य, जो उनके विुलताओं के बावुजुद संलग्न रहता हैं, बहुत कुछ कर सकता हैं अपेक्षाकृत उस व्यक्ति के, जो जीवन में कभी असफल न हुआ हो।

Or

It is because of the two-nation-theory that the Kashmir-conflict began. In India the theory was never accepted and it is of interest that the spokesmen of the Muslims of India have reacted violently to Pakistani leaders' claim to speak for them. Even though their attitude was never in doubt. Indian Muslims have done well to emphasize that they are with the people of Kashmir and the rest of India in their faith in secularism. Kashmir to them is as to the Kashmir themselves and integral part of India. Perhaps reiteration of this view on their part was necessary to prevent the outside world being misled by the hollow and hypocritical utterances of Pakistani representatives. So far as the people of India are concerned, the only problem in Kashmir today is the vacation of Pakistani aggression and the reunion of occupied areas with the rest of the state.

दो राष्ट्रों के सिद्धांत के कारण कश्मीर का संघर्ष प्रारम्भ हुआ। भारत में यह सिद्धांत कभी स्वीकृत नहीं हुआ था और यह ध्यान देने की बात हैं कि भारतीय मुसलमानों के प्रतिनिधियों ने पाकिस्तानी नेताओं के इस दावे के विरूद्ध प्रबल प्रतिक्रिया दी है कि वे उनकी ओर से बोल सकते है। यद्यपि उनका दृष्टिकोण कभी सन्देहास्पद नहीं था तथापि भारतीय मुसलमानों ने इस बात पर जोर देकर यह अच्छा किया है कि धर्मनिरपेक्षता में विश्वास करते हुए, वे कश्मीर और शेष भारत की जनता के साथ हैं। उनके लिए कश्मीर भारत का उसी प्रकार से एक अविभाज्य अंग हैं जिस प्रकार से कश्मीर के लोगों के लिए। कदाचिद् उनकी ओर से इस विचार को फिर से जोर देकर कहना आवश्यक था, जिससे कि बाह्य जगत् पाकिस्तानी प्रतिनिधियों के थोथे और आडम्बरपूर्ण कथनों से भ्रमित न हो जाए। जहाँ तक भारत के लोगों का सम्बन्ध हैं, कश्मीर की इस समय एक ही समस्या हैं और वह यह कि पाकिस्तान के आक्रमण को यहाँ से खाली कराया जाय और पाकिस्तानी अधिकृत क्षेत्रों को शेष राज्य के साथ फिर से मिला दिया जाए।

5. निम्नलिखित का एक–तिहाई शब्दों में संक्षेपण कीजिए तथा रेखांकित पंक्तियों का भाव–पल्लवन अपने शब्दो में कीजिए। (अंक 10 + 5 = 15)

''यदि हम गम्भीरतापूर्वक विचार करें तो प्रतीत होगा कि केवल आर्थिक उन्नति और शारीरिक सुखों के उपभोग से मनुष्य को पूर्ण शान्ति नहीं मिलती। उसे रह–रहकर यह ख्याल आता है। कि भौमिक उन्नति और सुखों के परे और उनसे भी ऊँची कोई वस्तु है या नहीं। इतना ही नहीं, समझदार आदमी तो अर्थ और सुख प्राप्त करने में भी पहले इस बात का ध्यान रखना चाहता है कि अर्थ और सुख की उपलब्धि धर्म के विरूद्ध तो नहीं की जा रही है। धर्मपूर्ण भौमिक उन्नति ही उसे सुख शान्ति प्रदान कर सकती है। इस प्रकार धर्म जिसके विस्तृत अर्थ में सम्पूर्ण कर्तव्य क्षेत्र और उच्च आदर्शों का समावेश है, उस मनुष्य के जीवन में ओत–प्रोत हो जाता है। उसके जीवन की प्रत्येक क्रिया और उसका प्रत्येक पहलू धर्म से अनुप्राणित हो जाता है। धर्म उसके लिए कुछ समय के लिए अलग या कहीं मन्दिर–मस्जिद में बैठकर अभ्यास करने की ही वस्तु नहीं रह जाती।''

6. सरकारी व अद्धसरकारी पत्र में अन्तर– **(15 अंक)**

	सरकारी पत्र		**अर्द्धसरकारी**
1.	यह पद के नाम से लिखे जाते हैं	1.	यह अधिकारी के नाम से लिखे जाते हैं।
2.	यह सरकारी या कार्यालय स्तर पर भेजे जाते हैं।	2.	यह अधिकारी स्तर पर लिखे जाते हैं।
3.	सरकारी पत्र गोपनीय नहीं होते हैं	3.	यह पत्र गोपनीय होते हैं।
4.	यह उच्च स्तर से निम्न स्तर की और सम्प्रेषित किए जाते हैं।	4.	यह दो समकक्ष अधिकारिक रूप के मध्य सम्प्रेषित होते हैं।
5.	इन पत्रों में तथ्य ही मुख्य होता हैं आत्मीयता गौढ़ होती हैं।	5.	इन पत्रों में आत्मीयता मुख्य होती हैं।
6.	इन पत्रों की भाष आदेशात्मक होती हैं।	6.	इन पत्रों की भाषा मैत्री पूर्ण होती हैं।
7.	इन पत्रों में सम्बोधन सरकारी होता हैं।	7.	इन पत्रों में सम्बोधन निजी होता हैं।
8.	इन पत्रों का प्रारम्भ यह कहने का आदेश हुआ हैं। से किया जाता हैं।	8.	इन पत्रोकं का प्रारम्भ आपको सूचित करते हुए खुशी का अनुभव हो रहा हैं से किया जाता हैं।
9.	इन पत्रों में आभारसूचक शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता है।	9.	इन पत्रों में प्रयोग किया जाता हैं।
10'.	यह पत्र पूर्ण रूप से औपचारिक होते हैं।	10.	ये पत्र भी औपचारिक होते हैं लेकिन अनौपचारिक का समावेश होता हैं।

अथवा

अनुस्मारक व पृष्ठांकन में अन्तर –

अनुस्मारकक– पूर्व में सम्प्रेषित किए गए आदेश, निर्देश का पालन न होने की स्थिति में पुनः स्मरण कराने के लिए जो पत्र व्यवहार किया जाता हैं। स्मरण पत्र तीन बार भेजे जाते हैं–

1. मूलपत्र के 30 दिन या 6 हफ्ते बाद, पहला अनुस्मरण पत्र भेजा जाता हैं।
2. पहले अनुस्मरण से 15 दिन बाद दूसरा स्मरण पत्र भेजा जाता हैं।
3. दूसरे अनुस्मरण पत्र के सात दिन बाद तीसरा स्मरण पत्र भेजा जाता हैं। जिसमें यह स्पष्ट कर दिया जाता हैं कि यदि आदेशों को पालन न किया गया तो आपके प्रति कानूनी कार्यवाही की जायेगी।

अनुस्मरण पत्र में सदैव विषय स्मरण कराने हेतु होता हैं तथा इसका स्वयं का कोई भी प्रारूप नहीं हेाता हैं। पूर्व में जिस प्रकार का पत्र सम्प्रेषित किया गया था। इसका प्रारूप उसी प्रकार का होगा।
जैसे– सरकारी का सरकारी पत्र जैसा। अर्द्धसरकारी का अर्द्धसरकारी जैसा।

पृष्ठांकनः– जब पत्र में दी गई सूचना एवं आदेशों को एक से अधिक अधिकारी, विभाग तथा कार्यालयों को सम्प्रेषित करनी होती हैं तो व पृष्ठांकन के रूप में की जाती हैं। पृष्ठांकन का प्रारूप पत्र में भवदीय के तुरन्त बाद प्रतिलिपि के नीचे तैयार किया जाता हैं। जिसका क्रमांक मूलपत्र के बदले क्रम में होता है।

पृष्ठांकन में अधिकारी व कार्यालयों का क्रमानुसार वर्णन किया जाता हैं। इसके बाद हस्ताक्षर के ठीक नीचे हस्ताक्षर कृतेय लिखा जाता है। जिसमें संबंधित अधिकारी हस्ताक्षर करता है।

प. क्रमांक
कार्यालया का नाम

दिनांक–

विषयः–
संदर्भः–

यह कहने का आदेश हुआ हैं कि

संलग्न

हस्ताक्षर

प्रतिलिपि–
पृष्ठांकन
पृष्ठांकन क्रमांक – बढ़ते क्रम में

दिनांक

1.
2.
3.
4.

हस्ताच्क्षर कृतेय

अथवा

KAUTILYA ACADEMY
INDORE

प्रतिवेदन किसे कहते हैं इसके मुख्य तत्व लिखिए।

प्रतिवेदन– प्रतिवेदन शब्द प्रति वेदन से मिलकर बना है। जो कि संस्कृत की धातु विद् में प्रति उपसर्ग लगाने से बनता हैं। जिसका अर्थ होता हैं। अनुभव करने वाला या विशुद्ध जानकारी रखने वाला।

प्रतिवेदन में मूल विषयवस्तु विभिन्न साक्ष्य, तर्क प्रमाण, मत–विमत, निर्णय तथा अंत में सुझाव अनिवार्य सोपान होते है। अतः किसी मामले या प्रकरण की जांच जो कि साक्ष्य व प्रमाणसम्मत हो तो उसे प्रतिवेदन कहा जाता हैं। सरकारी या गैर सरकारी स्तर पर एक या अधिक पीठासीन या सेवानिवृत्त न्यायाधश पर गठित समिति या आयोग द्वारा विशेष मामलों की छानबीन जांच पर आधारित विवरण तथा सुझाव के अभिलेख को प्रतिवेदन कहा जाता हैं।

प्रतिवेदन के मुख्य तत्व– इसके तत्व निम्न. हैं–

1. **प्रकरण विशेष**– प्रतिवेदन का मूल तत्व वह मामला या प्रकरण होता हैं जिसकी छानबीन प्रमाण या साक्ष्य के आधार।
2. **मनोनीत समिति/अधिकारी**– प्रतिवेदन का दूसरा मूल तत्व गठित की गई समिति या नियुक्त अधिकारी होता हैं जो कि दिये गये मामले पर प्रतिवेदन तैयार करता है। यह हमेशा पीठासीन अधिकारी या न्यायाधीश होते हैं।
3. **अध्ययन की शर्ते**– प्रतिवेदन में यह आवश्यक तत्व हैं कि प्रतिवेदन प्रस्तुतकर्ता उसकी समस्त अध्ययन की शर्तो को पूरा करता हैं अर्थात् प्रकरण सम्बंधी विषय का विशेषज्ञ होना चाहिए।
4. **अभिलेखबद्धता**– मौखिक प्रतिवेदन हमेशा मूल्यहीन होते हैं। अर्थात संबंधित अधिकारी प्रत्येक साक्ष्य व प्रमाण को अभिलेखबद्ध कर प्रस्तुत करता हैं। अतः अभिलेखबद्धता प्रतिवेदन का आवश्यक तत्व माना जाता हैं।
5. **निश्चित अवधि**– समिति गठन के समय ही प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का समय भी निश्चित कर दिया जाता हैं । अतः दिये गये समयंतराल में प्रतिवेदन प्रस्तुत करना होता हैं। यह अवधि 1 दिन से लेकर 1 वर्ष तक होती हैं।
6. **अभिमत**– प्रतिवेदन का अंतिम या मूल तत्व अभिमत या सुझाव होते हैं। जो कि प्रतिवेदन प्रस्तुत कर्ता का आवश्यक रूप से प्रस्तुत करने होते हैं।

अथवा

11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन पर प्रतिवेदन लिखिए।

11 वाँ हिन्दी सम्मेलन

स्थान– अंतर्राष्ट्रीय स्वामी विवेकानंद **दिनांक–**

सभाग्रह पाई मॉरीशस

अध्यक्ष– श्रीमति मंत्रालय स्वराज

सम्मेलनकर्ता– विदेश मंत्रालय भारत

शुभंकर/लोगो – मोर व डोडो

हिंद महासागर में प्रतीक चिन्ह

तिथि– 18 से 20 अगस्त

मुख्य अतिथि– गोवा की राज्यपाल

म्रदुला सिन्हा तथा पं. बंगाल के राज्यपाल– केसरी नाथ त्रिपाठी

विषय– विश्व हिन्दी एंव भारतीय संस्कृति।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

महादेय,

यह विदित हो कि हिन्दी विश्व सम्मेलन का आयोजन राष्ट्रभाषा प्रचारणी समिति वर्धा की 1973 की सिफारिशों के आधाार पर 10 से 14 जनवरी 1975 को वसुधैव कुटुम्ब की भावना से हुआ था।

इसी श्रृंखला में 10 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन का आयोजन 10 से 12 सितम्बर, 2015 को भोपाल में आयोजित किया गया था तथा इसी सम्मेलन में 11वें विश्व हिन्दी सम्मेलन की घोषणा की गई थी।

11 वीं विश्व हिन्दी सम्मेलन 17 अगस्त शाम 5.30 बजे गंगातालाब से प्रारम्भ हुआ यह 18 से 20 अगस्त को अंतिम अवस्था पर पहुँचा जिसमें 60 हजार शीर्ष सम्मान के रूप में दिये गये इस सम्मेलन में दुनिया भर से साहित्यकार, विद्वान तथा लेखक उपस्थित हुए एवं इस सम्मेलन के उपलक्ष्य में मॉरीशस सरकार ने दो डाक टिकट जारी किए। जिसमें एक ने दोनों देश के राष्ट्रीय ध्वज तथा दूसरे पर दोनों देश के राष्ट्रीय पक्षी का छायाचित्र अंकित किया गया है। मॉरीशस के प्रधानमंत्री ने भारत सरकार के सहयोग से बने सायबर टॉवर को अटल बिहारी बाजपेयी टॉवर नाम देने की घोषणा की है।

अपने उद्घाटन सम्मेलन में सुषमा स्वराज ने कहा था कि भाषा एवं संस्कृति एक–दूसरे के पूरक है। इसलिए संस्कृति को बाचाना हैं, तो भाषा को बचाना होगा। इस सम्मेलन में 290 प्रतिनिधि भाग लेने पहुँचे साथ ही यह पहली बार हुआ कि भारत से सभी राज्य और दिल्ली, चंड़ीगढ़ तथा पाण्डुचेरी से भी प्रतिनिधि शामिल हुये।

11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में गगनांचल नामक पत्रिका का प्रकाशन किया गया।

संलग्नः–

प्रतिवेदक
क, ख, ग

प्रश्न 7. **(12 अंक)**

i. अंगूठा दिखाना– मना करना
वाक्य– जब राम को दोस्त की सहायता की आवश्यकता पड़ी तब उसने अंगूठा दिखा गया।

ii. आग में घी डालना– क्रोध को बढ़ाना
वाक्य– राकेश मोहन का दुश्मन हैं और जब मोहन के समझ राकेश की प्रशंसा की तो आग में घी डाल दिया।

iii. कलेजा मुँह को आना– घबरा जाना
वाक्य– हल्दी घाटी के युद्ध में महाराजा का साहस देखकर शत्रुओं का कलेजा मुँह को आ गया।

iv. कान खड़े करना– सावधान करना
वाक्य– पाकिस्तान की हरकतों को देखकर भारत ने अपने कान खड़े कर लिये।

v. खून खोलना – क्रोध करना
वाक्य– मोहन की असहिष्णु बातों को सुनकर राम का खून खोल गया।

vi. आगे नाथ न पीछे पगहा– पूर्ण स्वतंत्र
वाक्य– बाढ़ में राम का पूरा परिवार खत्म हो गया इसलिए आज राम के आगे नाथ न पीछे पगहा।

vii. खग जाने खग की भाषा– समान प्रवृत्ति के लोग एक दूसरे की भाषा में समझते
वाक्य– कहते है कि दुष्ट व्यक्तियों को दुष्ट की मित्रता मिलती हैं क्यों कि खग की भाषा खग जानते है।

KAUTILYA ACADEMY INDORE

viii. खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे – क्रोध में व्यक्ति कुछ भी करता हैं
वाक्य– राम ने गुस्सा में गलत बयान दे दिये लेकिन जब गुस्सा शांत हुआ तो उसे पश्चाताप हुआ इसलिए कहते खिसमानी बिल्ली खंभा नोंचें।

प्रश्न 8. **(12 अंक)**

i. ''यथाशक्ति''– शक्ति के अनुसार, अव्ययीभाव समास।

ii. उच्छ्वास– उत् + श्वास, व्यंजन संधि। तपोभूमि– तपः + भूमि, विसर्ग संधि।

iii. ब्राह्मण के तीन पर्यायवाची– स्वयंभू, विधना, विधि।

iv. उष्ट्र व भ्रातजा का तद्भव– ऊँट व भतीजा।

v. ''दीर्घ+आयु'' की संधि व नाम– दीर्घायु – दीर्घ स्वर संधि।

vi. खीर तथा खेत का तत्सम– क्षीर तथा क्षेत्र।

vii. नैतिक व शाश्वत का विलोम–अनैतिक तथा नश्वर।

viii. चतुष्पद व चतुष्पथ का अर्थ– चौपाया व चौराहा।

9. निम्नलिखित गद्यांश के आधार पर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर लिखिए : **(12 अंक)**

संस्कृति एक ऐसी चीज नहीं जिसकी रचना दस–बीस या सौ–पचास वर्षो में की जा सकती हो। हम जो कुछ भी करते हैं उनसे हमारी संस्कृति की झलक होती हैं, यहाँ तक कि हमारे उठने–बैठने, पहनने–ओढ़ने, घूमने–ुिरने और रोने हँसने में भी हमारी संस्कृति की पहचान होती हैं, यद्यपि हमारा कोई भी एक काम हमारी संस्कृति पर्याय नहीं बन सकता। असल में, संस्कृति जिंदगी का एक तरीका हैं, और यह तरीका सदियों से जमा होकर उस समाज में छाया रहता हैं जिसमें हम जन्म लेते हैं। इसलिए, जिस समाज में हम पैदा हुए हैं अथवा जिस समाज से मिलकर हम जी रहे हैं, उसकी संस्कृति ही हमारी संस्कृति हैं, यद्यपि अपने जीवन में हम जो संस्कार जमा कर रहें हैं, वह भी हमारी संस्कृति का अंग बन जाते हैं और मरने के बाद हम अन्य वस्तुओं के साथ अपनी संस्कृति की विरासत भी अपनी संतानों के लिए छोड़ जाते हैं। इसलिए संस्कृति वह चीज मानी जाती हैं जो हमारे सारे जीवन को व्यापे हुये हैं, तथा जिसकी रचना और विकास में अनेक सदियों के अनुभवों का हाथ हैं। यही नहीं, बल्कि संस्कृति हमारा पीछा जन्म–जन्मांतर तक करती हैं। अपने यहाँ एक साधारण कहावत हैं कि जिसका जैसा संस्कार हैं, उसका जवैसा ही पुनर्जन्म भी होता हैं। जब हम किसी बालक या बालिका को बहुत तेज पाते हैं तब अचानक कह देते हैं कि वह पूर्व जन्म का संस्कार हैं। संस्कार या संस्कृति, असल में, शरीर का नहीं, आत्मा का गुण हैं, और जबकि सभ्यता की सामग्रियों से हमारा संबंध शरीर के साथ ही छूट जाता हैं तब भी हमारी संस्कृति का प्रभाव हमारी आत्मा के साथ जन्म–जन्मांतर तक चलता रहता हैं।

i. संस्कृति जिंदगी का एक तरीका हैं पंक्ति से लेखक का आशय हैं कि संस्कृति?

ii. संस्कृति व्याप्ति हैं?

iii. संस्कृति निरंतर प्रवाहमान है, क्योंकि.....?

iv. सभ्यता और संस्कृति में मूल अंतर यह हैं कि सभ्यता.....?